ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 179-180
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 रमाकान्त यादव
एसो0 प्रोफेसर– बी0एड0 चरण सिंह पी0जी0 कालेज, हेओरा, इटावा, (उ0प्र0), भारत

Received- 08.12. 2021, Revised- 13.12. 2021, Accepted - 17.12.2021 E-mail: drajay2860@gmail.com

सारांशः ***शिक्षा एक साधन है तो शिक्षा एक आराधना भी है, शिक्षा वर्तमान की अमूल्य धरोहर है और भविष्य की अटूट आस्था तथा विकास भी है, शिक्षा में विकास की अपारसंभावनाएं निहित है, शिक्षा में शिक्षक की भूमिका काफी अहम होती है। जब शिक्षक अपने अनुभवों से विद्यार्थियों को शिक्षा रूपी झरना प्रदान करता है, तो इसकी अविरल गति जीवन में हमेशा बहती रहती है। शिक्षा वह गूढ़ सच्चाई हैजो अनन्त जनराशि की अचल तरंगों से प्रतिध्वनित होती है अतः शिक्षा व्यक्ति के शरीर मन एवं आत्मा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के संदर्भ में एडरीसन ने कहा हैं " संगमरमर के पत्थर के लिए जो महत्व मूर्तिकार का है वही महत्व आत्मा के लिए शिक्षा का है। " इसके आध ारपर हम कह सकते है कि शिक्षा मानव विकास का सर्वोत्तम साधन है यह केवल मानव विकास ही नही अपितु व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के विकास का साधन है , प्रत्येक व्यक्ति, समाज , राष्ट्र एवं विश्व के अपने कई लक्ष्य एवं उद्देश्य निध ारित है और इन लक्ष्यों उद्देश्यों की उपलब्धि केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव हो सकती है।***

कुंजीभूत शब्द– अमूल्य धरोहर, अटूट आस्था, शिक्षक की भूमिका, अविरल गति जीवन, अनन्त जनराशि, अचल तरंगों।

विभिन्न युगों में देश काल एवं परिस्थिति के अनुसार लक्ष्य एवं उद्देश्यों में परिवर्तनआते रहे एवं मानव जीवन से संबंधित भिन्नं भिन्न पक्षों को प्राथमिकता दी जाती रही है, उसके अनुसार शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तित होता रहा। शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है, जो जीवन के विभिन्तप क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करती है। एक भटकते राही को दिशा प्रदान करती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली एक अनवरत प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कुछ न कुछ सीखता रहता है और जीवन के इन अनुभवों से सीखना ही शिक्षा है। समय अनुरूप विद्वानों ने शिक्षा की अलग–अलग परिभाषाएं दी है –

ऋग्वेद के अनुसार –शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य को आत्म निर्भर और निःस्वार्थ बनाती है।

उपनिषदों के अनुसार –शिक्षा मुक्ति का मार्ग है।

स्वामी दयानन्द के अनुसार –शिक्षा चरित्र–निर्माण और सही प्रकार के जीवन का साधन है। गाँधी जी के अनुसार –शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बच्चे के भीतर उसके तन–मन और आत्मा में निहित सर्वोत्तम को बाहर निकाल कर लाना है। वर्तमान समय की बदलती हुई परिस्थितियों के संदर्भ में नैतिक मूल्यों की अवधारणा को शिक्षा से सम्बद्ध करके व्यक्ति एवं समाज में सार्थक व मनोनुकूल परिवर्तन लाया जा सकता है। राष्ट्र की चहुँमुखी प्रगति में अनुशासनमय जीवन का विशेष महत्व है। वही राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है, जिसके नागरिक अपना जीवन, धारा की और दृष्टिपात करे तो पायेंगे कि आज नागरिकों में अनुशासनहीनता, स्वार्थपरता एवं बेईमानी आदि दुर्गुण बढ़ते जा रहे है। हिंसा व अराजकताकी जननी अनुशासनहीनता ही है। अनुशासन केवल दबाव से ही उत्पन्न नहीं किया जा सकता वह तो स्वयं ही उत्पन्न होगा। स्वानुशासन स्थायी है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध विद्वान इमाइल दुर्खीम का मानना है कि "समाज का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूर्ण ताने–बाने में झलकता है।' इसलिए अनेक विचारकों ने समाज को एक नैतिक शक्ति माना है। नैतिक विकास को बालक पाठ्यचर्या का महत्वपूर्ण क्षेत्र माना गया है। नैतिकता का विकास भौतिक विकास से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।

मूल्यों की परिभाषा : जी.ई.मूर के अनुसार "मूल्य ऐसा गुण है, जो अखण्ड, अभेद व अनिर्वचनीय है इसके अनुसार न यह भौतिक है न मानसिक और न अनुभवगम्य है। इस दृष्टि से यह एक अखण्ड, अमूर्त विचार है, जिसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

समाज के मूल्य, परम्पराओं रीति–रिवाज आदि सब मिलकर समाज की संस्कृति का निर्माण करते है। समय–समय पर संस्कृति का मूल्यों के आवागमन द्वारा परिमार्जन होता रहता है। इन मूल्यों का जन्म समाज की आंकाक्षाओं में से होता है जो कि समाज का भावी मूल्यों के निर्माण का आधार है। भारतीय समाज की अपनी गोरवमयी संस्कृति है, जिसके अपने मूल्य या आदर्श है जिन पर आधुनिक भारतीय समाज टिका हुआ है। चतुर्वेदी, अर्चना (2001)"विभिन्मि सांस्कृतिक संगंठनों द्वारासंचालित विद्यालयों मैं अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत गुणों, भौतिक मल्यों और राष्ट्रीय जागरूकता की भावना का अध्ययन" विषय पर पी.एच डी,स्तरीय शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि विद्यालयों की शिक्षा और सम्पूर्ण वातावरण पर उनकी संस्कृति की छाप होती है। प्राप्त आकड़ों से ज्ञात हुआ है कि सरस्वती शिशु मंदिरों के छात्र छात्राओं में सृजनात्मक योग्यता, नैतिकमूल्य और राष्ट्री–चेतना सबसे अधिक पायी गई। पश्चिमी संस्कृति के विद्यालयों की छात्र–छात्राएँ नेतृत्व गुण के प्रथम सोपान पर थे, पर वे सृजनात्मक योग्यता, नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय–भावना की दृष्टि से द्वितीय सोपान पर थे। डॉ0 मिश्र,

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

बृजेशय (2002) ने "वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना" शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और निष्कर्ष में पाया कि रामायण के नैतिक, धार्मिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक मूल्यों का दार्शनिक विवेचन करके वर्तमान में इनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। इनके अध्ययन की सफलता का प्रमाण उक्त अध्ययन का अल्पावधि में प्रमुख भाषाओं में अनुवाद तथा अनुसंधान की मुख्य साइट्स पर इसकी उपलब्धता है। मिश्र ने निष्कर्ष दिया कि रामायण के मूल्यों की न सिर्फ भारत बल्कि समस्त विश्व को चरित्र में उतरना इस समय की प्रमुख आवश्यकता है।

अध्ययन का औचित्य– छात्रों में सही मूल्यों का समुचित विकास कर पाये तॉकि देश का भावी मार्ग प्रस्तुत हो। अतः प्रश्न उठता है, विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास कैसे किया जाये। आज वर्तमान शिक्षा प्रणाली को उचित नहीं माना जा रहा है, क्योंकि आज शिक्षक का कार्य कक्षा में छात्रों को नोट्स देना व छात्र का कार्य उन्हें पढ़कर डिग्री हासिल करने तक रह गया है। विज्ञान और तकनीकी के बवंडर ने हमारी आत्मचेतना तथा संवेदनशीलता को इतना ज्यादा बिखेर दिया है कि आधुनिकता के भंवर–जाल में फंसकर मानवता की अस्मिता संकटग्रस्त हों चुकी है। अतः आज सभी राजनेता व शिक्षाविद नैतिक मूल्यों को हास के लिये चिन्तित है तथा शिक्षा में जीवन–मूल्यों के समावेश पर बल देते रहे हैं। इसलिए शोधकर्ता ने शोध का विषय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन रखा गया।

अध्ययन के उद्देश्य– उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों केसैद्धांतिक मूल्य पर लिंग, संकाय एवं इनकी अन्तः क्रिया के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना – उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्य पर लिग, संकाय एवं इनकी अनतः क्रिया का सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।

अध्ययन शोध विधि– इस शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है

जनसंख्याप्रस्तुत अध्ययन में देवास शहर के उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की लिया गया है ।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्तर के 89 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

उपकरण–प्रस्तुत अध्ययनमें शोधकार्य के लिए उपकरण के रूप में प्रमाणित मापनियों का प्रयोग किया गया। मूल्य मापनी का स्वरूपःमूल्य मापनी के रूप में डॉ. राजकुमार ओझा द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण– उच्चत्तरमाध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य पर लिंग, संकाय एवं

इनकी अन्तः क्रिया के प्रभाव का अध्ययन के लिए 2×3 प्रसरण का विश्लेषण (2×3 Analysis of Variance) का प्रयोग किया गयाहै।

निष्कर्ष– 1–बालक और बालिकाओं के सैद्धांतिक मूल्य में कोई अन्तर नही पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ– इस प्रकार मूल्य की शक्ति ही मानवता का धरातल है, समाज में हमारी पहचान हमारे चरित्र और आचरण से होनी चाहिए। जीवन में कभी–कभी ऐसे अवसर भी आते हैं जब धन काम नहीं आता। अतःधन पर गर्व नहीं करना चाहिए। शाशवत्द मूल्यों को लेकर जीने में आत्मशक्ति मिलती है। मानव केवल सांसारिकता और भौतिकता के वशीभूत होकर अपनों से रागद्वेष का कारण बना लेता है। यदि वह इन सबसे ऊपर उठकर केवल मूल्यों के प्रति समर्पित होकर लोक व्यवहार करे तो कटुता का कोई कारण ही न बने। जो आत्मीयता, भाईचारा और विश्वास को पोषित करता है। आज आवश्यकता है कि हम जीवन मूल्यों को आत्मसात करे तभी हमारा सामाजिक ढाँचा स्वस्थ, सुन्दर और सुरक्षित रह सकेगा। यही भारतीयता का सन्देश है, भारतीय होने का गौरव है और प्रस्तुत अध्ययन की परिणति है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुच. एम.बी., "फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन", एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
2. मुन्जाल, डा0 एस. (2001). "रिसर्च मैथोडोलॉजी", श्रीमती किरण परनामी, राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
3. भटनागर, सुरेश (2006). "भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास", आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. शर्मा, आर.ए. (2006). "शिक्षा अनुसंधान", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. रूहेला, एस.पी. (2010). "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार", अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
6. गुप्ता, एस.पी. (2010). "उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान", शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. राय, पी.एन. (2010–11). "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
8. सिंह अरूण कुमार (2011). "मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ", मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली जर्नल।

*****